त्याग और भोग

२९.७.७३

त्याग और भोग ये दो शब्द हैं और इन दोनों शब्दों की परिभाषा अनेक प्रकार से की गई। त्याग क्या है और भोग क्या है? किसी वस्तु के प्रति यदि आसक्ति नहीं है तो धीरे-धीरे मनुष्य के भीतर एक दूसरी शक्ति पैदा होने लगती है किन्तु इसे मनुष्य जान नहीं पाता। आप कहेंगे कि कैसे? जब मनुष्य किसी एक वस्तु का त्याग करता है तो समझ रखो कि दूसरी ओर अनुराग जब तक नहीं होगा तब तक त्याग नहीं हो सकता। आप फिर भी शायद न समझे हों कि अनुराग न होगा तो त्याग न होगा यह क्या? यों ही लोग त्याग करने के फेर में रहते हैं और वे फेर ही में रह जाते हैं, त्याग उनसे होता नहीं।

अनुराग में त्याग कहाँ, यह भी एक प्रश्न है। लेकिन बात इसमें यह है कि जब अनुराग होता है तो एक ओर जब अनुराग होगा, तो जिस स्थिति में वह पहले था वहाँ का त्याग स्वतः होगा। जब तक पहले के स्थान का त्याग न हो तब तक अनुराग का क्या पता लगे। आप देव दर्शन के लिए चले तो कुछ समय के लिए आपको घर का त्याग करना पड़ा। जब आपके हृदय में देव दर्शन का अनुराग होगा तब तो यह त्याग होगा। फिर एक बार शान्त होकर के समझने की चेष्टा करें कि अनुराग के बिना इस जीवन में रस नहीं आता। यह अनुराग चाहे किसी वस्तु का क्यों न हो।

अनुराग को यदि हम प्रेम कहें तो प्रेम भी एक भाव है, अनुराग भी एक भाव है। प्रेम कुछ गहरा होता है और अनुराग प्रेम की तरह गहरा नहीं

होता। जैसे रंग तो वही है, लेकिन एक गहरा रंग है, एक हल्का रंग है। अनुराग होते-होते प्रेम होगा और प्रेम होने के बाद आनन्द होगा। जब तक आपके हृदय में अनुराग नहीं तो प्रेम नहीं, प्रेम नहीं तो आनन्द नहीं।

कल्पना करो आप द्वापर की और यह कल्पना करो कि रास हो रहा है। इसके साथ ही साथ आपको यह भी कल्पना करनी होगी कि घर का त्याग हुआ तब तो गोप बालाएँ निकल पड़ीं अनुराग के कारण, भगवान कृष्ण के रास में सम्मिलित होने के लिए। तो इस अनुराग ने घर छुड़ा दिया। घर कहाँ से छुड़ा दिया? रास से लौटकर घर में फिर चले गये। घर में चला गया शरीर। घर में तो केवल शरीर गया है क्योंकि अनुराग हो गया है राम से, अब उसका मन वहीं है जहाँ रास है। तो घर में रहते हुए भी घर का त्याग हो गया। आप कहीं भी रहो यदि उस स्थान विशेष में आपकी आसक्ति नहीं है तो वही आपका त्याग होगा। जब तक आपके हृदय में अनुराग की भावना नहीं है तब तक त्याग की भावना मौखिक हो सकती है।

वस्तु को छोड़ सकते हैं आप लेकिन वस्तु को छोड़ने मात्र से तो वस्तु छूटती नहीं। क्यों? प्रत्येक वस्तु अपना एक स्थान बना लेती है। कैसे? मैं कहता हूँ एक-एक शब्द आपके हृदय में स्थान बनाकर बैठा है। आप कभी अपने हृदय को टटोलते नहीं हैं, देखते नहीं हैं। आपको पता नहीं है कि आपके हृदय में कितने शब्द बैठे हुए हैं। आप कहेंगे कैसे? तो देखो – किसी ने आपको अपशब्द कहा, गाली दी। वे शब्द आपके भीतर बैठे हुए हैं कि ये शब्द गाली के हैं। अगर वे शब्द आपके भीतर बैठे हुए नहीं होते तो आपको मालूम भी नहीं रहता कि ये गाली है कि क्या है? किसी ने आपको प्रेम की दो बातें कही, तो प्रेम के दो शब्द आपके भीतर बैठे हुए हैं तब तो आपको मालूम

होगा कि ये प्रेम की बातें हैं। यदि वह भाव, वह शब्द आपके भीतर नहीं तो आपको प्रेम का पता ही नहीं लगेगा। यह जो नाम जपा जाता है, वह नाम जपना जो है वह क्या करता है, वह जगह बना देता है। जिसका नाम मनुष्य लेता है उसी की जगह हृदय में बना देता है।

यह नाम लेना कोई दुनिया का खेल नहीं, दुनिया को दिखलाने की चीज नहीं। नाम लेनेवाला नाम यदि अनुराग के साथ लेता है तो उस नाम के साथ-साथ जिसका हम नाम लेते हैं उसका स्थान हो जाता है और उसके साथ-साथ अनुराग से हमने नाम लिया तो अनुराग भी हमारे हृदय में स्थान ग्रहण कर लेता है। जब तक हम अनुराग से नाम नहीं लेते तब तक वह नाम भी नहीं, अनुराग भी नहीं, तब तो फिर यही कहना होगा कि कागज़ के फूल हैं सुगन्ध कहाँ? इन कागज़ के फूलों में सुगन्ध कहाँ? इस नाम में अनुराग कहाँ?

क्यों हम यह कहते हैं कि हम नाम लेते हैं जब कि नाम लेने के साथ-ही-साथ हमारे हृदय में जिसका हम नाम लेते हैं, उसकी सुन्दर मुग्ध करने वाली तस्वीर अंकित नहीं होती। हमने नाम लिया नहीं। यदि नाम लेते तो उसी के हो जाते। न हमें त्याग करना पड़ता, न घर छोड़ना पड़ता, न बच्चों को छोड़ना पड़ता। कुछ नहीं करना पड़ता यदि केवल नाम के साथ ही अनुराग रहता। जिसके प्रति अनुराग रहता है, जिसका नाम लेते हैं वह धीरे-धीरे हृदय पर ऐसा असर करता है, हृदय को ऐसा मोहित करता है कि हृदय फिर सुख-दुःख की परिक्रमा नहीं करता जैसे मनुष्य मन्दिर की परिक्रमा करता है। ये हृदय की परिक्रमा मन के द्वारा न जाने कितनी बार होती रहती है। दिन-रात चक्कर काटता रहता है मन। असर पड़ता है हृदय पर।

तो त्याग और भोग। किसका त्याग करना है? त्याग नहीं करना है, अनुराग करना है। प्यार करके देखो – त्याग अपने आप होगा। आप इस बात की तरफ ध्यान मत दो कि आपको कुछ छोड़ना है। आप प्यार करके देखो, अपने आप छूट जाता है। आप निरर्थक बातों को सोचने में अपना समय व्यतीत करते जा रहे हैं। उम्र आपकी चली, बड़ी रफ्तार से चली। आप तो यह कहते हैं कि हमारे लिए एक-एक दिन व्यतीत करना कठिन है और मैं यह कहता हूँ कि आप इस प्रकार एक-एक दिन निरर्थक नष्ट करते जा रहे हैं। इसके लिए एक दिन आपको पश्चाताप करना पड़ेगा।

ज्ञात-अज्ञात मनुष्य की भावनाएँ ये मन के निरर्थक भाव मनुष्य को शान्त नहीं होने देते। अभी तो आपको ज्ञात का ही पता नहीं तो अज्ञात का कैसे पता लगेगा। मन जब शान्त होगा तब, तब आपको ज्ञात और अज्ञात दोनों का पता लगेगा। ज्ञात किसको कहते हैं – जिसकी जानकारी आपके सामने है और अज्ञात वह है जो हो रहा है लेकिन आपको पता नहीं।

फिर वही कहा जाए कि त्याग और भोग। हाँ आप लोग करके देखें, उसी के भीतर त्याग है। आपने अभी भोगा नहीं। आपने केवल शरीर के सम्पर्क को ही भोग समझ रखा है। शरीर का सम्पर्क कोई भोग नहीं, यह तो पशु धर्म है। पशु-पक्षी जिस प्रकार बच्चे पैदा करते हैं उसी प्रकार यह शरीर भी, मनुष्य का शरीर होकर भी उसी बच्चे-कच्चे में ही फँसा हुआ है। अभी तक वह मनुष्य नहीं बना है। एक मुर्गी अण्डा पालती है लेकिन अण्डा पालने के बाद जब वह मुर्गे के रूप में हो जाता है तो फिर उसकी तरफ ध्यान नहीं देती, लेकिन मनुष्य को आप देखें – बच्चा बड़ा हो गया, शादी हो गई, उसके सन्तान हो गई लेकिन अब भी उसका मोह ठीक वैसा का वैसा बना हुआ है।

यह जो मोह का सेवन है, यह अण्डे के सेवन से भी बदतर है। आखिरी दम तक कहता है – मेरा शरीर जा रहा है, मेरे लड़के को बुलाओ, मेरी बहु को बुलाओ, मेरा पोता कहाँ है, मेरा अमुक कहाँ है, इनको बुलाओ, उनको बुलाओ। ठीक है बुला भी दिया, जायेगा क्या लेकर के ? मोह। यह मोह फिर खींच लायेगा तुमको। तुम्हारी भक्ति कहाँ गई ? जिसको तुमने याद किया है, जिसका तुमने नाम लिया है, जिसके साथ तुम्हारा अनुराग हुआ है उसका पता उसी समय लगेगा जब आप शरीर छोड़ने लगेंगे। उस वक्त जिसका आपने नाम लिया है अनुराग से, प्यार से वह खड़ा हो जायेगा आपके सम्मुख।

आपको कुछ नहीं देखना है। बाल-बच्चे भी खड़े रहेंगे, पति भी खड़ा रहेगा, दुनिया भी खड़ी रहेगी लेकिन आपका ध्यान एक उसी की तरफ। तब आपको मालूम होगा कि ये नाम लिया हुआ, अनुराग से नाम लिया हुआ, प्रेम से नाम लिया हुआ, आज कारगर हो रहा है, सफल हो रहा है। आज की की हुई भक्ति कल प्यार का कारण बनी। आप प्यार करने के फेर में मत जाओ। प्यार स्वत: होगा। जैसे-जैसे आपका प्यार बढ़ता चला जायेगा, वैसे-वैसे ही आप अपने प्यारे के पास पहुँचते चले जायेंगे। शरीर, शरीर यहीं रहेगा और प्यारा! प्यारा हृदय में रहेगा, यह हृदय उसके चरणों में जाकर रहेगा, चरणों में अर्पित होगा। भक्ति करो तो कुछ ऐसी करो कि जिसमें यह न कहने को रहे कि यह भक्त है या भगवान।

देखो चन्दन भी है, जल भी है लेकिन जब चन्दन रगड़ा जाता है जल पर तो फिर वह जल, जल नहीं रहता चन्दन हो जाता है। बहुत सीधी-सी बात है – जल है और चन्दन है। अब जल को चन्दन से रगड़ा तो जल, जल नहीं रहा – जल हो गया चन्दन। है न ? इसी तरह से भक्त जब

प्रभु का हो जाता है तो भक्त-भक्त नहीं रहता भक्त भगवान हो जाता है। "प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी" क्यों कहा था रैदास ने? अनुभव किया था उसने कि जब तक मैं जल की तरह सरस, सरल, प्राणदायक नहीं बन सकता तब तक मैं प्रभु का प्रिय नहीं बन सकता। तो "प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी" हम पानी क्यों। यह पानी है, बह रहा है। यह समय है बह रहा है, कोई लौटा के नहीं ला सकेगा, कोई लौटा के ला नहीं सका।

आज का दिन बेकार गया। क्यों? आज अनुराग नहीं, आज नाम नहीं। सुबह से शाम हो गई और प्यार नहीं, भाव नहीं। क्या किया दिन भर? आज का दिन बेकार गया। लेकिन जब मनुष्य के भीतर यह भावना आयेगी बेकार क्यों – मैंने तो किसी को माना है, मेरे हृदय में तो किसी की छवि अंकित है, तब न उसका दिन बेकार होगा, न जीवन बेकार होगा।

अभी एक किताब मैं देख रहा था। आधुनिक काल में उन बातों का कोई असर नहीं होता। असर नहीं होता उसका कारण यह है कि मनुष्य का विश्वास हट गया है और प्रत्येक वस्तु को वह तर्क पर लाकर के देखना चाहता है। जो सूक्ष्म है वह भी वह स्थूल रूप में देखना चाहता है। प्यार को दिखला नहीं सकता कोई। आप कर्म करेंगे उससे लोग अंदाज़ लगायेंगे कि आप प्यार करते हैं। यदि आपसे कोई यह कहे कि प्यार को दिखलाओ तो आप क्या, कोई नहीं दिखला सकता। किन्तु आपसे कोई यह कहे कि हाथ दिखलाओ तो आप दिखला देंगे क्योंकि यह स्थूल हाथ है। प्यार तो भीतर की चीज है इसे बाहर से कोई दिखला नहीं सकता।

गौरांग महाप्रभु का एक भक्त था। वह घर-बार छोड़कर भागना चाहता था। गृहस्थ नहीं होना चाहता था। गौरांग ने कहा कि तुम ऐसा मत

करो। हम किसी-न-किसी समय कुछ ऐसा भाव देंगे, कुछ ऐसा संकेत करेंगे जिससे तुम्हें शान्ति मिलेगी, भाव मिलेगा, प्रेम मिलेगा। ठीक वैसा ही किया गया, वैसा ही भाव दिया गया। एक दिन वह स्नान कर रहा था तो देखा एक काली-काली वस्तु चली आ रही है। उसने समझा ऐसे ही कोई मर गया होगा, उसकी लकड़ी होगी, वही बह रही है पानी में, किन्तु इसी समय उसको यह संकेत मिला कि यह तो लकड़ी नहीं है पत्थर है। तुम इसको ग्रहण करो और इसकी मूर्ति बनाकर तुम पूजा करो। वह कुछ आगे बढ़ा और उस पत्थर को पकड़ लिया। पत्थर लाकर पत्थर से मूर्ति बनाने वाले व्यक्ति से कहा – भई इससे भगवान की एक मूर्ति बना दो। मूर्ति भी बनायी गयी। मूर्ति का नाम रखा गया 'गोपीनाथ'। गोपीनाथ की वह पूजा किया करता था। कुछ दिन बाद उस भक्त की शादी हो गई। घर में एक लड़का हो गया। कुछ दिन के बाद उसकी स्त्री चली गई शरीर छोड़कर। पाँच वर्ष का बच्चा जो था वह भी चला गया दुनिया से। वह बहुत नाराज हो गया। कहने लगा – क्या लाभ है इस मूर्ति से। इसके रहते-रहते मेरी औरत गयी, मेरा लड़का गया। मेरे लिए तो अब कहीं कुछ न रहा। मैं इसकी पूजा नहीं करूँगा। इसको न मैं अन्न दूँगा, न जल दूँगा, न कुछ और दूँगा। इतने में होता क्या है, उसे ऐसा आभास होता है जैसे मूर्ति उसे कह रही है कि मैं प्यासा हूँ, मुझे पानी पिलाओ। कहता है वह – मैं तुझे पानी पिलाऊँ? तू होता कौन है? तेरे रहते-रहते तो मेरी स्त्री ने शरीर छोड़ दिया, मेरा लड़का चला गया। तो वह क्या कहता है जानते हैं आप? कहता है कि दो लड़के एक साथ नहीं रह सकते। मैं तेरा लड़का हूँ। चूँकि एक लड़का तेरे और था तो जहाँ लड़का रहता है, वहाँ मैं नहीं रहता। मैं तो वहाँ रहता हूँ जहाँ मैं ही लड़का हूँ। कहने लगा कि ठीक है – मेरा लड़का तो नहीं रहा लेकिन जब मेरा शरीर चला जायेगा तो मुझे पिण्ड़ कौन देगा? मेरा श्राद्ध कौन करेगा? तो वह विग्रह कहता है कि इसकी तू चिन्ता क्यों करता

है ? यह मेरा काम है, मैं तेरे लिए पिण्ड़ दूँगा। मैं तेरा श्राद्ध करूँगा। तब फिर वह भक्ति में मग्न हो जाता है।

कुछ दिन के बाद उसका शरीर छूट जाता है। अब वही विग्रह अपने किसी और भक्त को स्वप्न में दिखलाई देता है। उसको कहता है कि मैं अमुक आदमी के यहाँ हूँ और तुमको उसका श्राद्ध इत्यादि सब करना होगा, सब तैयारी करनी होगी। तुम मुझे वैसे ही कपड़े पहना दो जैसे कि पिता के मरने पर उसका लड़का वस्त्र ग्रहण करता है। आँखों में अश्रुपात होता है। वह जो विग्रह है, वह जो पत्थर की मूर्त्ति है उसकी आँखों से पानी गिर रहा है। उसको वैसा ही कपड़ा पहनाया जाता है जैसे कि एक पिता के मरने पर एक पुत्र को। आज भी उस तिथि के दिन उस भक्त को पिण्ड़ दान दिया जाता है। गोपीनाथ जी की मूर्त्ति अब भी वहाँ है। यह क्या चीज है। केवल प्यार है।

मैं आपसे क्या कहूँ। आपने कभी पहले सुना भी होगा, हो सकता है न भी सुना हो। बाबा जब थे जगले की माँ के पास, तो जगले की माँ का न पति रहा, न पुत्र और तब वह कहने लगी कि बाबा, सब कुछ तो ठीक है लेकिन तुम मुझे यह बतलाओ कि जब मेरा शरीर चला जायेगा तब कौन मेरा दाह-संस्कार करेगा, कौन मुझे पिण्ड़ देगा ? बाबा ने कहा – मैं तेरा पुत्र हूँ, तू घबरायी क्यों ? तेरे जितने कर्म करने होंगे, वे सब मैं करूँगा। वह संन्यासी, साधु जो सब कुछ छोड़ चुका है, उसने ऐसा कहा। जगले की माँ का शरीर छूट जाता है। बाबा क्या करते हैं उस समय जैसे एक मृत स्त्री के लिए जो कुछ किया जाता है वह सब किया बाबा ने। वाक सिद्धि थी। कहा ठाकुर को भई, मेरी माँ मर गई है हमको तो सब सजाना होगा। यही नहीं, बारहवें दिन

सबको खूब अच्छी तरह खिलाया, दक्षिणा दी, सब कुछ किया। जो हाथ से पैसा छूना पसन्द नहीं करता, भक्त के लिए उसने भी सब कुछ किया। तो पहले की जो घटना, पहले की जो वह बात हुई सो हुई, लेकिन यह तो इस जमाने की बात है, अपने समझने की बात है, अपने भीतर की चीज है। हमने नहीं देखा तो क्या और भक्तों ने देखा। यह अनुराग है, यह प्यार है।

आप यदि पत्थर को भी प्यार करो तो पत्थर के भीतर भी आपके प्रति कुछ-न-कुछ भावना अवश्य ही आएगी। यदि आप पत्थर को पत्थर ही समझेंगे तब वह भावना आयेगी कहाँ से ? पत्थर को पत्थर न समझो। उसके साथ कोई सम्बन्ध होना चाहिए। उसके साथ कुछ प्यार होना चाहिए। उसके साथ कुछ भाव होना चाहिए। जब आपका भाव होगा, प्यार होगा तब आपको ध्यान नहीं लगाना होगा। जब तक प्यार नहीं होता है, अनुराग नहीं होता है तब तक मनुष्य को माला भी फेरनी है, ध्यान भी लगाना है। जब प्यार हो गया तो लगाना क्या ? अपने ही ध्यान लगा रहता है।

किसी तरह से अपना एक सम्बन्ध स्थापित हो जाए प्रभु से, प्रभु के चरणों में यदि हमारा प्रेम हो जाए तो न तो स्वर्ग की चिन्ता करनी है और नरक तो है ही कहाँ ? यदि प्रभु के भक्तों के लिए नरक है तो भगवान को भी नरक में ही जाना होगा। जिसका हमेशा ही आनन्दमय जीवन रहा, जिसने केवल प्रभु का नाम लेकर ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया है उसके लिए तो यहीं जीवित अवस्था में ही मुक्ति है, जीवित अवस्था में ही स्वर्ग है। यह तो आपकी कोरी कल्पना है कि जिस कल्पना में आप सुख को स्वर्ग मानते हैं और कष्ट को एक प्रकार का नरक मानते हैं।

कष्ट और तकलीफ किसको होती है? स्थूल शरीर को, मन के कारण। इन दोनों का जब तक सम्पर्क है तब तक इस स्थूल शरीर को मन के कारण कष्ट होता है। जब शरीर छूट गया तो जिसमें अनुभूति होनी चाहिए थी, जिसको कष्ट का अनुभव होना चाहिए था, वह शरीर-शरीर यहीं रह गया, अब चला कौन? मन, आत्मा का भाव। फिर आत्मा तो निर्लिप्त है। उसको तो स्वर्ग-नरक से कोई मतलब नहीं। अब तो यह जो मन है इसी के ऊपर सब बाजा बजेगा। तो मन का कोई रूप नहीं, तो मन का जब कोई रूप नहीं, सूक्ष्म है वह, तो नरक कहाँ फिर? नरक का दण्ड़ कहाँ?

समझें आप। ये बहुत सीधी-सी बात है। जरा थोड़ा-सा समझने की कोशिश करें आप, कि भई जितना सुख-दुःख होता है वह किसको होता है? शरीर को होता है मन के कारण। तो जिसको सुख-दुःख का अनुभव करना था वह तो यहीं रह गया, अब चला मन और आत्मा। आत्मा तो निर्लिप्त है। आत्मा को तो कोई दण्ड दे नहीं सकता। हवा को तो कोई दण्ड दे नहीं सकता। आकाश को तो कोई दण्ड दे नहीं सकता। तो यह जो पञ्च तत्त्व हैं उनको कोई दण्ड दे नहीं सकता और मन का कोई रूप नहीं। स्थूल चीज कोई है नहीं, तो फिर उसके लिए नरक कहाँ? आपने देखा होगा तस्वीर बनाने वालों ने नरक का एक रूप दिखलाया है जिसमें लोहे का खम्भ खड़ा किया है और मनुष्य को बाँध दिया है उससे। लेकिन यह केवल तस्वीर बनाने वाले की कल्पना है। कौन बाँधेगा किसको? आत्मा बँधने की नहीं और मन का कोई रूप नहीं। बाँधेगा कौन? तू स्वयं बंधक। तू ही बँधा है इसमें और कोई नहीं बँधेगा। कहीं कोई तकलीफ आ गई तो यही समझता है व्यक्ति कि बड़े बुरे कर्म किये हैं। हम कहते हैं तब तो राम ने भी बड़ा बुरा कर्म किया था कि चौदह वर्ष का वनवास पाया। उससे भी बुरा कर्म किया था कि सीता का

भी अपहरण हो गया और उससे भी बुरा कर्म किया था कि भाई लक्ष्मण को लग गयी शक्ति बाण और वह गिर पड़ा वहाँ। तो मतलब यह कि कुछ नहीं। यह सब कुछ नहीं।

मनुष्य भला बुरा जो समझता है यह सब शरीर की अवस्था को लेकर के समझता है। यह शरीर, यह कहाँ जायेगा। यह तो साथ जाने वाला नहीं। मेरे साथ तो जायेगा मेरा प्यार, मेरा भाव। मेरा भाव जायेगा उसके पास जिसके प्रति मेरा भाव है। जिसको आप चिट्ठी लिखेंगे उसी के पास जायेगी न, यह तो सीधी-सी बात है। तो जिसको आपने प्यार किया है वह आपका प्यार उसी के पास जायेगा।

भक्त के लिए कहीं कोई नरक नहीं। यह तो मान्यता के ऊपर है। जो यह कहते हैं कि जब आदमी मरने लगता है तो यमराज जो है वह एक भैंसे पर चढ़कर के गदा लेकर आता है, इस कल्पना से ही मरता है वह कमबख्त प्राणी। यदि उसके भीतर यह भावना है कि जिस वक्त मेरा शरीर छूटेगा वह शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी मेरे सामने खड़ा रहेगा, तो कैसा नरक? नरक क्या कहता है। न - रख। दिल में कोई भावना न रख। अगर तैंने कोई भावना रखी है तो नरक तैयार। याद रख – न - रख। कोई भावना न रख। मैं कहता हूँ नरक न बोल – न रख दिल में कोई सद्मा, कोई दुःख, कोई सुख, कोई चिन्ता, कुछ न रख।

मनुष्य हर वक्त चिन्ता करता रहता है। ये बच्चे हैं इनका क्या होगा। इन बच्चों का तुमको पता था क्या जब ये पिता के घर में थे? किसको पता है कब बच्चा होगा, क्यों होगा, कैसे होगा, कितने होंगे? लकीर देखकर

किसी ने बता दिया इतने होंगे। संयोग से हो गये। ओ हो यह तो जानकार है। कोई कुछ नहीं जानता। यह अंदाज़ है। आप लोगों ने इन्हीं बातों को प्रधानता दे रखी है। यथार्थ बात यह है कि जिसने दिए हैं वही रक्षा भी करता है।

एक बार फिर मैं आपसे यही कहूँगा कि त्याग और भोग क्या है। जब तक आपके हृदय में अनुराग नहीं होगा, प्यार नहीं होगा तब तक त्याग नहीं होगा। जब त्याग हो जायेगा तब आप भोग में जायेंगे – प्यार के भोग में, शरीर के भोग में नहीं। जब तक आप शरीर के भोग में हैं तब तक आपको प्यार का पता नहीं। प्यार में एक विशेष आनन्द आता है उसी को प्यार का भोग कहते हैं। भगवान को भोग लगाया जाता है। क्या मतलब है? वस्तु तो यही रहती है, श्रद्धा ज्ञापन करना, अपनी श्रद्धा सामने रखना। यही तो बात है न। इसलिए तत्व को समझ करके आनन्द लेना चाहिए और ये जो गप्प हाँकने वाले लोग घूम रहे हैं, चक्कर मार रहे हैं उनके फेर में आपको जाने की ज़रूरत नहीं।

जब से सद्गुरु की कृपा से बोलना शुरू किया, मैं कभी पाप की बात नहीं कहता, कभी स्वर्ग-नरक की बात नहीं करता। जो लोग स्वर्ग-नरक से डरते हैं उनको मैं जरूर समझा देता हूँ, कह देता हूँ सद्गुरु की कृपा से कि तेरे लिए नरक नहीं है। एक तो नरक है ही नहीं और ये जो दण्ड की बात है यह झूठी बात है। आप भला-बुरा करते हैं – हाथों-हाथ आपके भीतर तो मीटर लगा हुआ है सब पता लगता है। किसी गरीब का भला करके देखो मानसिक शान्ति आती है कि नहीं। किसी को आप निरर्थक कष्ट देंगे पैसे के अभिमान में या किसी को नीचा दिखाने के लिए तो एक बार तो फूल जाओगे लेकिन बाद में जरा भी बुद्धि में आओगे तो सोचोगे कि क्यों तकलीफ दी।

बेकार में फिर कोई झगड़ा बढ़ेगा इससे तो कोई शान्ति नहीं मिलेगी। तो इस तरह से हर बात का मीटर तो आपके भीतर है।

अगले रविवार को हो सका तो फिर में आपसे त्याग और भोग के बारे में कहूँगा। अभी जो कुछ कहा उसका सार यही है कि प्यार करो, अनुराग करो त्याग स्वतः होगा। यह जो आप नाम बोलेंगे, प्यार से बोलेंगे तो वह हृदय में स्थान बना लेगा, फिर आपके भीतर प्रेम ही का भाव बना रहेगा और जब आप प्रेम को समझ जायेंगे तब आपको कहीं कोई तकलीफ नहीं होगी।

आप सायरन की आवाज सुन रहे हैं। नौ बजा है न। अंग्रेजी में 'नो' का अर्थ है नहीं। मुझे अब और नहीं बोलना है। बस हो गया आज यहीं तक।

❋ ❋ ❋